हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 31 May - 6 June 2026

सुशासन तथा पुनर्जागरण की प्रणेता

पुण्यश्लोक
अहिल्याबाई होळकर

न्यायप्रिय शासक | धर्मपरायण | प्रजाहितदक्ष | कर्तव्यनिष्ठ | पराक्रमी व दयालू

पितांबरी® टूर्स और ट्रॅवल्स

दुनिया घूमिए, अपनापन पाइए।

भारत के अद्वितीय स्थलों की सैर!

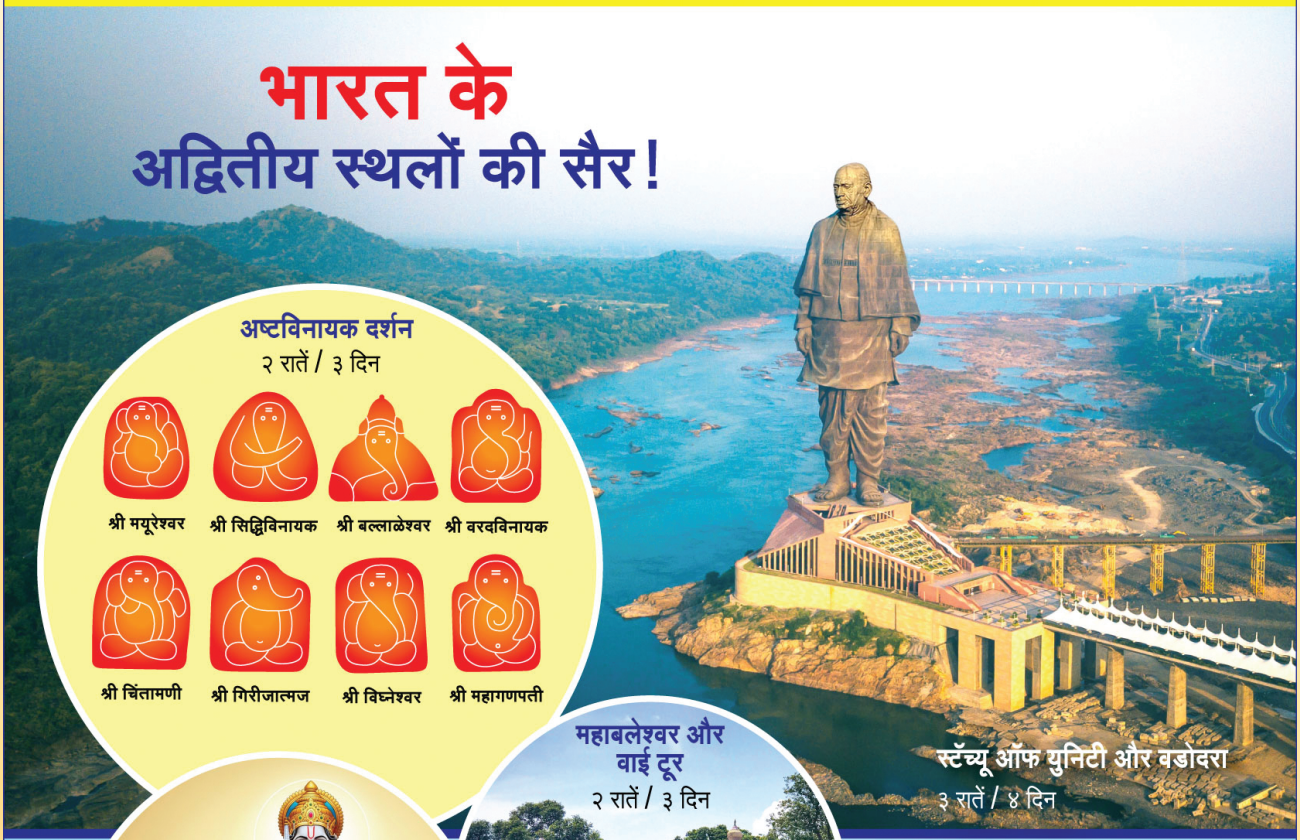

अष्टविनायक दर्शन
२ रातें / ३ दिन

श्री मयूरेश्वर | श्री सिद्धिविनायक | श्री बल्लाळेश्वर | श्री वरदविनायक

श्री चिंतामणी | श्री गिरीजात्मज | श्री विघ्नेश्वर | श्री महागणपती

महाबलेश्वर और वाई टूर
२ रातें / ३ दिन

स्टॅच्यू ऑफ युनिटी और वडोदरा
३ रातें / ४ दिन

श्री समर्थ रामदास द्वारा स्थापित ११ मारूती दर्शन
२ रातें / ३ दिन

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

हमारे अन्य टूर्स

कोस्टल कर्नाटक	केरल	हंपी बदामी	राजस्थान- मेवाड़ / मारवाड़	कश्मीर
(बाय रोड) ६ रातें / ७ दिन	(बाय फ्लाईट) ४ रातें / ५ दिन	(बाय रोड) ५ रातें / ६ दिन	(बाय फ्लाईट) ५ रातें / ६ दिन	६ रातें / ७ दिन

जल्द ही हिमाचल और नैनीताल टूर्स का आयोजन

नेपाल टूर ! (बाय फ्लाईट) - ७ रातें / ८ दिन

Attractive Discount on Select Tours Costing more than ₹12000/-

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क:

8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352, 8828913131

अनुक्रमणिका

◆ लोकमाता का सुशासन, न्याय और जनकल्याण	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	04
◆ लोकमाता का जीवन और व्यक्तित्व	श्रुति सिन्हा	06
◆ शौर्य और कूटनीति की प्रतिमूर्ति	वेदप्रकाश दुबे	08
◆ कर्तृत्व, कर्तव्य और लोकसेवा की अनुपम प्रतिमा	ललित गर्ग	10
◆ मनवा भीतर-भीतर रोए	प्रेम कुमार चौबे	13
◆ पंजाब में सिखों की घर वापसी	सचिन तिवारी	15
◆ बंगाल : परिवर्तन की ओर	डॉ. संतोष झा	18
◆ प्रशांत महासागर में अल नीनो संकट	डॉ. दीपक कोहली	20
◆ आधुनिकता या आत्मविस्मृति	ब्रिजेश शुक्ला	22
◆ बुलडोजर न्याय का बढ़ता चलन	मुकेश जोशी	23
◆ सान्या बनीं पहली महिला फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर	संकलन	25
◆ समाचार	-	26

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

सुशासन, न्यायप्रियता, जल संरक्षण, जनकल्याण और उद्योग नगरी इंदौर की स्थापना में उनका योगदान भारतीय इतिहास में अमिट हस्ताक्षर है। वे केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं बल्कि प्रशासनिक आदर्श की जीवंत प्रतिमूर्ति हैं।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

लोकमाता का सुशासन, न्याय और जनकल्याण

अहिल्याबाई होळकर का नाम अत्यंत सम्मान और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे केवल एक शासक नहीं थीं बल्कि जनसेवा, न्याय, धर्म, संस्कृति और सुशासन की जीवंत प्रतिमूर्ति रहीं। 31 मई को उनकी जयंती मनाई जाती है और यह अवसर हमें उनके जीवन, संघर्ष, प्रशासन और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को स्मरण करने का अवसर प्रदान करता है।

अहिल्याबाई होळकर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में हुआ था। उनके पिता मानकोजी शिंदे गांव के सरपंच थे। उस समय महिलाओं की शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, पर उनके पिता ने उन्हें पढ़ने-लिखने का पर्याप्त अवसर दिया। बचपन से ही उनमें धार्मिकता, संवेदनशीलता और नेतृत्व क्षमता दिखाई देती थी।

अपने अदम्य साहस और शिव आस्था के बल से इतिहास को भी अपने भीतर समाहित करने वाली अहिल्याबाई होळकर का शासनकाल (1767-1795) भारतीय इतिहास में आदर्श शासन व्यवस्था का एक स्वर्णिम अध्याय माना जाता है। उन्होंने अपने शासन में ऐसी व्यवस्थाएं विकसित कीं, जिनमें जनता का हित सर्वोपरि था। वे एक ऐसी शासक थीं, जिन्होंने न केवल राज्य को समृद्ध बनाया बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय और सुविधा पहुंचाने का कार्य किया। यही कारण है कि उन्हें 'लोकमाता' की उपाधि दी गई।

1767 में उन्होंने औपचारिक रूप से जो शासन सम्भाला। उनकी शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे दरबार में आम लोगों की समस्याएं स्वयं सुनती थीं। किसी भी व्यक्ति को न्याय पाने के लिए अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। वे अधिकारियों पर कठोर निगरानी रखती थीं और भ्रष्टाचार को बिल्कुल सहन नहीं करती थीं।

उनका मानना था कि राजा का सबसे बड़ा धर्म जनता की सेवा है। उन्होंने प्रशासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित किया। जनता में अहिल्या बाई के कार्यों से उनकी उपस्थिति उन्हें जनप्रियता प्रदान करती है।

उद्योग और व्यापार के प्रति एक शासक की दृष्टि कैसी होनी चाहिए! इसका अद्भुत उदाहरण अहिल्या बाई ने दिया। 18वीं सदी में देवी अहिल्याबाई ने मालवा और सूरत के बेहतरीन बुनकरों को महेश्वर में बसने के लिए आमंत्रित किया। उनका उद्देश्य शाही मेहमानों और राजपरिवार के लिए विशेष और अद्वितीय नौ-यार्ड (9 गज) की साड़ियां बनवाना था। माना जाता है कि पहली महेश्वरी साड़ी का डिजाइन स्वयं रानी अहिल्याबाई ने ही तैयार किया था। बुनकारी को मुख्य रूप से स्थानीय महिलाओं और कारीगरों के लिए रोजगार का एक बड़ा साधन बनाया गया था। आज भी इस परम्परा को आगे बढ़ाने में महिला बुनकरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज भी महेश्वर की साड़ी पूरे भारत में प्रसिद्ध है और यह अहिल्या कालीन उद्योग मध्य प्रदेश के कपड़ा उद्योग के प्राण हैं।

लोकमाता भारतीय संस्कृति और धर्म की संरक्षिका भी थीं। उन्होंने पूरे भारत में मंदिरों, घाटों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक आस्था को बढ़ावा देना नहीं था बल्कि सांस्कृतिक एकता को मजबूत करना भी था। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त सोमनाथ मंदिर, महाकालेश्वर मंदिर और अनेक तीर्थस्थलों के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

उन्होंने देशभर में तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशालाएं और विश्राम स्थल भी बनवाए। व्यापक सांस्कृतिक दृष्टिकोण की धनी लोकमाता मानती थीं कि संस्कृति और धर्म समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं।

इस समय देश जल संकट से जूझ रहा है, ऐसे में हम आदर्श शासक अहिल्याबाई की शासन व्यवस्था को देखें तो ज्ञात होता है कि शासक को अपनी प्रजा के लिए कैसे चिंतित रहना चाहिए। लोकमाता ने जल संरक्षण को शासन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उन्होंने अनेक कुएं, बावड़ियां, तालाब और घाट बनवाए। इन निर्माण कार्यों का उद्देश्य केवल धार्मिक या सौंदर्यपरक नहीं था बल्कि जनता की मूल आवश्यकताओं को पूरा करना था।

उन्होंने कृषि के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार कराया। इससे किसानों को लाभ मिला और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

आज जब जल संकट विश्वव्यापी समस्या बन चुका है, तब अहिल्याबाई की नीतियां अत्यंत प्रासंगिक दिखाई देती हैं। उन्होंने बहुत पहले ही समझ लिया था कि जल संरक्षण किसी भी सभ्यता के विकास का आधार है।

अहिल्याबाई होळकर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक इंदौर को व्यापार और उद्योग का केंद्र बनाना था। उन्होंने समझ लिया था कि किसी भी राज्य की समृद्धि केवल सैन्य शक्ति से नहीं बल्कि आर्थिक विकास से सुनिश्चित होती है।

उस समय मालवा क्षेत्र व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, किंतु सुव्यवस्थित विकास की आवश्यकता थी। अहिल्याबाई ने व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार किया। उन्होंने व्यापारिक मार्गों का विकास कराया, बाजारों की स्थापना की और व्यापारियों को संरक्षण दिया।

उनके शासन में विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारी इंदौर आने लगे। उन्होंने व्यापारियों के लिए कर व्यवस्था को सरल बनाया और सुरक्षा सुनिश्चित की। परिणामस्वरूप इंदौर धीरे-धीरे एक प्रमुख व्यापारिक नगर बन गया।

अहिल्याबाई ने स्थानीय उद्योगों और कुटीर उद्योगों को भी प्रोत्साहित किया। वस्त्र निर्माण, हस्तशिल्प और कृषि आधारित व्यवसायों को संरक्षण देकर उन्होंने स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया। महिलाओं को भी आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया।

लोकमाता पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होळकर का जीवन त्याग, सेवा, साहस और धर्मनिष्ठा का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने अपने अनगिनत व्यक्तिगत दुःखों को पीछे रखकर, सदैव प्रजा की भलाई के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे केवल एक शासक नहीं थीं अपितु लोकमाता थीं। इन्होंने न्याय, धर्म और मानवता के आदर्शों को अपने शासन में उतारा।

श्रुति सिन्हा

लोकमाता का जीवन और व्यक्तित्व

31 मई को प्रजावत्सल वीर नारी लोकमाता अहिल्याबाई होळकर की 301वीं जन्म जयंती वर्ष है। जिसे पूरा भारतवर्ष बड़े उत्साह व गर्व के साथ मना रहा है। राष्ट्र समर्पित माता अहिल्याबाई होळकर जैसे व्यक्तित्व के विषय में स्वामी विवेकानंद ने लिखा है- इस देश की स्त्रियों से मैं ठीक वही बात कहूंगा, जो मैं पुरुषों से कहता हूं। भारत के प्रति और अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था रखें। शक्तिशाली, आशावादी और निःसंकोच बनें और याद रखें कि विश्व से यदि हिंदू को कुछ लेना है तो बदले में देने के लिए उसके पास असीमित ज्ञान सम्पदा है। (स्वामी विवेकानंद समग्र, खंड पंचम, पृ. 232)। स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में स्त्रियों की समान भूमिका मानते थे और भारतीय इतिहास में ऐसी ही महान अमर वीर महिला हैं प्रजावत्सल अहिल्याबाई होळकर माता। जिनका नाम अत्यंत सम्मान और श्रद्धा से लिया जाता है। वे केवल एक कुशल शासक ही नहीं वरन् न्यायप्रिय, धर्मपरायण, दयालु प्रजावत्सल महारानी भी थीं। उन्होंने अपने शासनकाल में जनकल्याण, धार्मिक पुनर्निर्माण, प्रशासनिक सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में जो कार्य किए, वे आज भी प्रेरणास्रोत हैं। भारतीय इतिहास में उन्हें 'मालवा की देवी' और 'लोकमाता' के रूप में याद किया जाता है।

अहिल्याबाई होळकर का जन्म 31 मई, 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी नामक गांव में हुआ था। उनके पिताजी का नाम मानकोजी शिंदे था। वे एक साधारण, परंतु संस्कारी परिवार से सम्बंधित थी। उस समय लड़कियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, फिर भी उनके पिता ने पुत्री अहिल्या को शिक्षा

प्रदान की। बचपन से ही अहिल्याबाई धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। बेहद सरल व दयालु स्वभाव उनका था।

लोकमाता अहिल्याबाई एक अत्यंत कुशल प्रशासक थीं। वे प्रतिदिन खुले दरबार में प्रजा की समस्याएं सुनती थीं। उनका मानना था कि राजा का पहला कर्तव्य जनता की सेवा करना है। उन्होंने भ्रष्टाचार और अत्याचार को रोकने के लिए कठोर कदम उठाए। उनके शासन में किसानों को विशेष संरक्षण मिला। उन्होंने सिंचाई व्यवस्था को बेहद समुन्नत किया और कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेकानेक योजनाएं चलाईं। व्यापार और उद्योग को भी प्रोत्साहन दिया, जिससे राज्य अत्यंत समृद्धशाली हुआ। अहिल्याबाई अपनी निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था के लिए सुप्रसिद्ध थीं। वे अमीर-गरीब सभी को समान दृष्टि से देखती थीं। यदि कोई अधिकारी जनता पर अत्याचार करता था, तो उसे कठोर दंड दिया जाता था। उनकी न्यायप्रियता के कारण प्रजा उन्हें लोकमाता के समान सम्मान व दर्जा देती थी।

पुण्यश्लोक माता अहिल्याबाई होळकर ने भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण व जीर्णोद्धार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय कई मंदिर आक्रमणों और उपेक्षा के कारण नष्ट हो चुके थे। उन्होंने अनेकानेक महत्वपूर्ण मंदिरों, घाटों, कुंओं, धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। कलाकारों विद्वानों, शिल्पकारों को अपने यहां संरक्षण प्रदान किया, उन्हीं के प्रयासों से महेश्वरी वस्त्र उद्योग और साड़ियों को विशेष पहचान मिली। पुण्यश्लोक अहिल्याबाई का जीवन अत्यंत सादा था। वे राजसी वैभव से बिल्कुल दूर रहती थीं और सामान्यजन की तरह जीवन जीती थीं। वे परम शिवभक्त थीं। नियमित रूप से पूजा-पाठ करती थीं। वे धर्म और मानव सेवा को ही सर्वोच्च मानती थीं। उनका स्वभाव अत्यंत विनम्र था। वे प्रजा के सुख दुख में सदैव सहभागी थीं। वे दानशीलता के लिए जनमानस में विख्यात थीं। गरीबों, विधवाओं और जरूरतमंदों की सहायता करना उनका तो स्वभाव ही था। 13 अगस्त 1795 को अहिल्याबाई जी होल्कर का निधन हो गया। जिससे सम्पूर्ण मालवा राज्य में शोक की लहर फैल गई।

उनके द्वारा निर्मित मंदिर, घाट, धर्मशालाएं आज भी उनकी महानता की साक्षी हैं। उनका जीवन हमें यह शिक्षा देता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो जनता की सेवा और कल्याण के लिए समर्पित हो। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

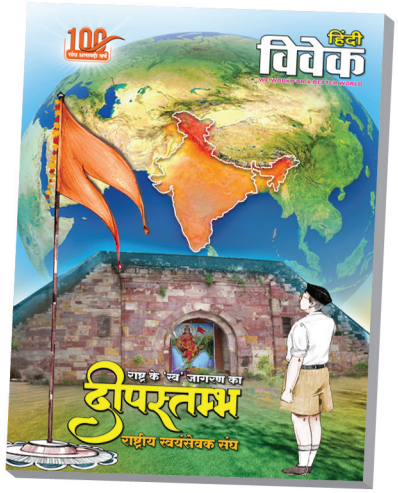

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

जयंती

अहिल्याबाई होळकर की जयंती 31 मई को है। उनकी जयंती पर उन्हें केवल मंदिरों का निर्माण कराने वाली देवी स्वरूप रानी के रूप में नहीं बल्कि दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ और अद्भुत सैन्य नेतृत्व क्षमता वाली शासक के रूप में भी स्मरण किया जाता है।

शौर्य और कूटनीति की प्रतिमूर्ति

वेदप्रकाश दुबे

मराठा साम्राज्य के गौरवशाली इतिहास में मातोश्री अहिल्याबाई होळकर का नाम अद्वितीय सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्हें सामान्यतः धर्मपरायण, न्यायप्रिय और लोककल्याणकारी शासक के रूप में याद किया जाता है, पर उनका व्यक्तित्व केवल यहीं तक सीमित नहीं था। वे एक कुशल प्रशासक, दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ और अद्भुत सैन्य नेतृत्व क्षमता वाली शासक थीं। 18वीं शताब्दी के अशांत राजनीतिक दौर में उन्होंने जिस बुद्धिमत्ता, साहस और रणनीति के साथ होळकर राज्य का संचालन किया, वह भारतीय इतिहास में एक असाधारण उदाहरण है। बाल्यकाल से ही अहिल्याबाई में अनुशासन, करुणा और नेतृत्व के गुण दिखाई देने लगे थे। कहा जाता है कि एक बार मल्हारराव होळकर ने उन्हें मंदिर में पूजा करते देखा और उनके संस्कारों से प्रभावित होकर अपने पुत्र खांडेराव होळकर के लिए उनका विवाह प्रस्ताव रखा। विवाह के बाद अहिल्याबाई ने केवल राजपरिवार की मर्यादाएं ही नहीं निभाईं बल्कि प्रशासन, सैन्य संगठन और राजनीति की जटिलताओं को भी समझना शुरू किया। मल्हारराव ने उनकी प्रतिभा को पहचान लिया था और उन्हें राज्य संचालन की व्यावहारिक शिक्षा दी। सन 1754 में भरतपुर के कुम्हेर युद्ध के दौरान खांडेराव होळकर की मृत्यु ने अहिल्याबाई के जीवन को गहरे संकट में डाल दिया। वे सती होने का निर्णय ले चुकी थीं, परंतु मल्हारराव होळकर ने उन्हें रोकते हुए कहा कि राज्य और प्रजा को उनकी आवश्यकता है। यह घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। इसके बाद उन्होंने स्वयं को पूरी तरह राज्य और समाज की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

1766 में मल्हारराव होळकर की मृत्यु और उसके कुछ समय बाद उनके पुत्र मालेराव के निधन ने होळकर राज्य को अस्थिरता के दौर में पहुंचा दिया। उस समय एक महिला का शासन सम्भालना आसान नहीं था। चारों ओर राजनीतिक षड्यंत्र, बाहरी संकट और आंतरिक विद्रोह थे। ऐसे कठिन समय में अहिल्याबाई ने अद्भुत आत्मविश्वास के साथ शासन

की बागडोर अपने हाथों में लीं। उन्होंने स्पष्ट समझ लिया था कि बिना मजबूत सेना और अनुशासित प्रशासन के राज्य की स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं रह सकती।

अहिल्याबाई केवल राजमहल में बैठकर आदेश देने वाली शासक नहीं थीं। वे युद्धक्षेत्र का निरीक्षण करती थीं, सैनिकों से संवाद करती थीं और सैन्य रणनीतियों पर स्वयं ध्यान देती थीं। समकालीन विवरणों में उल्लेख मिलता है कि वे हाथी पर सवार होकर शस्त्रों से सुसज्जित रहती थीं। उन्होंने सेना को आधुनिक बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। यूरोपीय युद्ध पद्धतियों और आधुनिक तोपखाने की उपयोगिता को समझते हुए उन्होंने सेना की कुछ टुकड़ियों को आधुनिक हथियारों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करवाई। उन्होंने तुकोजीराव होळकर को सेना का नेतृत्व सौंपा, जो मल्हारराव के अत्यंत विश्वसनीय सेनानायक थे। तुकोजीराव और अहिल्याबाई की जोड़ी ने प्रशासन और सैन्य शक्ति के बीच अद्भुत संतुलन स्थापित किया। यह उनकी दूरदर्शिता थी कि उन्होंने सैन्य शक्ति को केवल युद्ध का माध्यम नहीं माना बल्कि राज्य की स्थिरता और सुरक्षा का आधार बनाया।

1761 के पानीपत का तृतीय युद्ध ने मराठा शक्ति को गहरा आघात पहुंचाया था। होळकर सेना भी इस युद्ध के बाद कमजोर हो गई थी। ऐसे समय में अहिल्याबाई ने टूटे हुए सैन्य ढांचे को पुनर्गठित किया। उन्होंने हुतात्मा सैनिकों के परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की और नई भर्ती के माध्यम से सेना को पुनः सशक्त बनाया। यह केवल सैन्य पुनर्निर्माण नहीं था बल्कि सैनिकों के मनोबल को पुनर्जीवित करने का कार्य भी था। उनके शासनकाल में मालवा क्षेत्र में कई विद्रोह हुए। राजपूत सरदारों और चंद्रावतों ने होळकर सत्ता को चुनौती देने का प्रयास किया, परंतु अहिल्याबाई ने कठोरता और व्यावहारिकता दोनों का संतुलित प्रयोग किया। जहां आवश्यक हुआ, वहां सेना भेजकर विद्रोहों को दबाया और जहां सम्भव हुआ, वहां समझौते और पुनर्वास का मार्ग अपनाया। भील समुदाय और डाकुओं के विद्रोह को भी उन्होंने केवल बलपूर्वक समाप्त नहीं किया बल्कि उन्हें प्रशासनिक व्यवस्था से जोड़कर समाज की मुख्यधारा में शामिल किया। यह उनकी असाधारण राजनीतिक समझ का परिचायक था।

अहिल्याबाई की सबसे बड़ी शक्ति उनकी कूटनीतिक क्षमता थी। इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण पेशवा रघुनाथराव के साथ उनका संघर्ष है। मल्हारराव और मालेराव की मृत्यु के बाद रघुनाथराव को लगा कि एक विधवा महिला आसानी से दबाव में आ जाएगी और होळकर राज्य पर अधिकार किया जा सकता है। उन्होंने सेना के साथ मालवा की ओर कूच किया और अहिल्याबाई को सत्ता त्यागने का संदेश भेजा। अहिल्याबाई ने इस संकट का समाधान केवल सैन्य शक्ति से नहीं बल्कि अपनी अद्भुत राजनीतिक बुद्धिमत्ता से किया। उन्होंने रघुनाथराव को एक ऐतिहासिक पत्र लिखा, जिसमें कहा कि यदि वे एक महिला को हराते हैं तो इसमें कोई वीरता नहीं होगी लेकिन यदि हार गए तो यह अपमान इतिहास में अमर हो जाएगा। यह पत्र मनोवैज्ञानिक युद्ध का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी सेना को पूरी तरह तैयार रखा और स्वयं युद्ध के लिए तैयार हो गईं। जब रघुनाथराव ने देखा कि अन्य मराठा सरदार भी उनके इस कदम का समर्थन नहीं कर रहे हैं तो वे पीछे हट गए। बिना युद्ध किए अहिल्याबाई ने एक बड़े राजनीतिक संकट को समाप्त कर दिया। यह घटना उनकी रणनीतिक सूझबूझ और नैतिक शक्ति की सबसे बड़ी विजय थी।

मातोश्री अहिल्याबाई होळकर का जीवन प्रमाणित करता है कि महान नेतृत्व केवल युद्ध जीतने से नहीं बल्कि संकट में धैर्य, न्याय और सुदृढ़ नीति बनाए रखने से सिद्ध होता है। व्यक्तिगत जीवन के असीम दुःखों को अपनी कमजोरी बनाने के बजाए उन्होंने उसे लोक-कल्याण की शक्ति में बदल दिया और पूरे साम्राज्य को वात्सल्य तथा दृढ़ता से सम्भाला।

आदर्श

अहिल्याबाई होळकर वास्तव में कर्तव्य की वह ऊंची मीनार थीं, जिसकी ऊंचाई समय के साथ और बढ़ती जा रही है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि विपत्तियां व्यक्ति को रोक नहीं सकतीं, यदि उसके भीतर कर्तव्य की ज्योति जल रही हो।

ललित गर्ग

कर्तृत्व, कर्तव्य और लोकसेवा की अनुपम प्रतिमा

भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में यदि किसी नारी ने अपने कर्तृत्व, कर्तव्य, लोकसेवा, न्यायप्रियता और राष्ट्रधर्म के बल पर अमिट पहचान बनाई है तो वह नाम है अहिल्याबाई होळकर का। वे केवल मालवा की महारानी नहीं थीं बल्कि कर्तृत्व की वह ऊंची मीनार थीं, जिसकी छाया में जनकल्याण, धर्मरक्षा, नारी-सशक्तिकरण, सुशासन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अनेक आयाम विकसित हुए। राष्ट्र सेविका समिति ने अपने तीन आदर्शों में कर्तृत्व के लिए अहिल्याबाई को इसलिए चुना क्योंकि उनका जीवन कर्तृत्व की साधना और लोकमंगल की तपस्या का अद्भुत उदाहरण है। 31 मई 2026 को उनकी जन्म-जयंती की त्रिशताब्दी वर्ष केवल एक स्मरण नहीं बल्कि कर्तव्यनिष्ठ जीवन का पुनर्पाठ करने का अवसर है। आज जब समाज नेतृत्व-संकट, नैतिक अवमूल्यन और दायित्व-विस्मृति से जूझ रहा है, तब अहिल्याबाई का जीवन प्रकाश-स्तम्भ की तरह मार्गदर्शन करता है।

अहिल्याबाई होळकर का कृतित्व बहुआयामी, दूरदर्शी और लोककल्याणकारी था। वे केवल एक सफल शासक नहीं बल्कि जनसेवा, सुशासन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और नारी नेतृत्व की अद्वितीय प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने न्यायपूर्ण एवं संवेदनशील शासन व्यवस्था स्थापित कर मालवा को समृद्धि, शांति और विकास के शिखर पर पहुंचाया। कृषि, व्यापार, जलसंधारण, उद्योग एवं जनसुविधाओं को बढ़ावा दिया, किसानों को संरक्षण दिया तथा सामाजिक समरसता को मजबूत किया।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण हेतु काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, अयोध्या, द्वारका आदि तीर्थस्थलों का पुनर्निर्माण एवं विकास

कराया। नारी सम्मान, विधवा संरक्षण, शिक्षा, लोकसेवा और परोपकार के क्षेत्रों में उनके कार्य अत्यंत प्रेरणास्पद रहे। उन्होंने महेश्वर को कला, संस्कृति और वस्त्र उद्योग का केंद्र बनाकर आर्थिक आत्मनिर्भरता का मॉडल प्रस्तुत किया। उनका कृतित्व प्रशासनिक दक्षता, मातृवत् संवेदना, धर्मनिष्ठा, साहस, दूरदृष्टि और राष्ट्रनिर्माण की चेतना का अद्वितीय संगम था।

कर्तृत्व शब्द अहिल्याबाई होळकर के लिए केवल कार्य करने की क्षमता का द्योतक नहीं है बल्कि यह उनकी सृजनशीलता, नेतृत्व क्षमता, दायित्वबोध, निर्णयशक्ति, दूरदृष्टि और लोकमंगलकारी कर्मशीलता का समन्वित रूप है। उनके कर्तृत्व का अर्थ है- ऐसी कर्मनिष्ठा जो परिस्थितियों से हार न माने, संकटों को अवसर में बदले, व्यक्तिगत दुःखों से ऊपर उठकर समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए सृजन करे तथा अपने कार्यों से युग को दिशा दे। अहिल्याबाई होळकर जैसा आदर्श व्यक्तित्व वही बन सकता है जो केवल विचारों का नहीं बल्कि कर्म का भी शिखर व्यक्तित्व हो।

अहिल्याबाई होळकर का जीवन इसी अर्थ में कर्तृत्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। उन्होंने वैयक्तिक विपत्तियों, पारिवारिक आघातों और राजनीतिक चुनौतियों के बीच भी धैर्य, साहस और लोकसेवा का मार्ग नहीं छोड़ा। न्यायपूर्ण शासन, जनकल्याण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, धार्मिक धरोहरों के संरक्षण, नारी सशक्तिकरण, कृषि एवं व्यापार संवर्धन, सामाजिक सुधार और राष्ट्रचेतना के क्षेत्र में उनके कार्यों ने उन्हें केवल एक शासक नहीं बल्कि कर्तृत्व की आदर्श प्रतिमा बना दिया। उनका व्यक्तित्व बताता है कि महानता पद या शक्ति से नहीं बल्कि ऐसे कर्मों से बनती है जो समाज को प्रकाश, संरक्षण और नई दिशा दें।

अहिल्याबाई के जीवन में एक के बाद एक विपत्तियां आईं। पति खंडेराव होळकर की मृत्यु, ससुर मल्हारराव होळकर का निधन और फिर पुत्र मालेराव का असमय चले जाना- ये ऐसे आघात थे, जो किसी भी व्यक्ति को तोड़ सकते थे, परंतु उन्होंने दुःख को निजी सीमा तक सीमित नहीं रहने दिया। उन्होंने अपने आंसूओं को लोकसेवा की शक्ति बना दिया। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने सती होने का निर्णय लिया था, परंतु ससुर मल्हारराव ने उन्हें समझाया कि उनका जीवन प्रजा के लिए अधिक आवश्यक है। उसी क्षण से अहिल्याबाई ने अपने जीवन को व्यक्तिगत सुख से हटाकर लोकधर्म को समर्पित कर दिया। यही उनका सबसे बड़ा कर्तव्य-बोध था और यही उनके कर्तृत्व का शिखर था। उनके लिए राज्य सत्ता अधिकार नहीं, दायित्व था। शासन वैभव नहीं, सेवा थी और प्रजा करदाता नहीं, परिवार थी।

अहिल्याबाई स्वयं कहा करती थीं कि राजा का धर्म प्रजा के सुख में अपना सुख देखना है। यही कारण था कि उन्होंने शासन को मातृत्व का रूप दिया। वे प्रजा को संतान मानती थीं और उसी संवेदना से निर्णय लेती थीं। उनके शासनकाल (1767-1795) को मालवा का स्वर्णयुग कहा जाता है। उन्होंने करों में राहत दी, किसानों को संरक्षण दिया, कृषि और व्यापार को बढ़ावा दिया तथा सिंचाई, कुएं, बावड़ियां और जलस्रोत विकसित कराए। उस समय जब शासक युद्धों और विस्तार में व्यस्त थे, अहिल्याबाई जनजीवन को समृद्ध बनाने में लगी थीं। उनकी दृष्टि केवल राज्य की सीमाओं तक नहीं थी, उनका कर्तव्यबोध सम्पूर्ण भारत तक विस्तृत था।

अहिल्याबाई का कर्तृत्व केवल प्रशासन तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक विरासत को पुनर्जीवित करने का ऐतिहासिक कार्य किया। मुगल आक्रमणों और उपेक्षा से खंडित मंदिरों के पुनर्निर्माण का जो कार्य उन्होंने किया, वह अद्वितीय है। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया तथा अयोध्या, मथुरा, वृंदावन, हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम्, द्वारका, गया, उज्जैन आदि तीर्थों में मंदिर, घाट, धर्मशालाएं और अन्नक्षेत्र स्थापित किए। उनके लिए धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं था बल्कि संस्कृति, एकता और राष्ट्रीय चेतना का आधार था। वे समझती थीं कि यदि तीर्थ बचेंगे तो भारत की आत्मा बचेगी। उनकी यह दूरदर्शिता आज भी विस्मित करती है। उन्होंने भौगोलिक रूप से बिखरे भारत को सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का कार्य किया।

अहिल्याबाई के कर्तृत्व के अनेक एवं विविध आयाम हैं। वे एक न्यायप्रिय शासक थीं। उनके दरबार में किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होता था। वे प्रतिदिन स्वयं प्रजा की समस्याएं सुनती थीं। निर्णयों में धर्म, संवेदना और न्याय का संतुलन दिखाई देता था। उन्होंने अपराधियों को केवल दंडित नहीं किया बल्कि सुधारने का प्रयास किया। चोर और डाकुओं को पुनर्वास देकर समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। यह दंड नहीं, सुधारवादी शासन की सोच थी। उनकी शासन व्यवस्था में नारी सम्मान, विधवा संरक्षण और सामाजिक सुधार को विशेष महत्व मिला। उन्होंने विधवाओं को सम्पत्ति अधिकार देने का समर्थन किया तथा सती प्रथा, बाल विवाह और दहेज जैसी कुरीतियों के विरोध का साहस दिखाया।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या...
आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा
- सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.bank.in
KJSBank

मनवा भीतर-भीतर रोए

दहेज की अजगरी बांहों में आज भी नवविवाहिताएं जकड़ी जा रही हैं। लड़कियों को शिक्षित बनाने के साथ-साथ उन्हें व्यावहारिक ज्ञान देना भी आवश्यक है, ताकि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों को भली-भांति समझ सकें।

प्रेम कुमार चौबे

भारत को सदियों से संस्कृति, संस्कार और पारिवारिक मूल्यों की भूमि कहा जाता है। यहां नारी को केवल परिवार का सदस्य नहीं बल्कि शक्ति, ममता, लक्ष्मी और सरस्वती का स्वरूप माना गया है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है, वहीं देवताओं का वास होता है, लेकिन आज का कटु सत्य यह है कि उसी समाज में बेटियां दहेज की आग में झुलस रही हैं। विवाह, जिसे कभी सात जन्मों का पवित्र बंधन माना जाता था, आज कई स्थानों पर लेन-देन और सौदेबाजी का माध्यम बनता जा रहा है। रिश्तों की नींव अब प्रेम, विश्वास और संस्कारों पर कम बल्कि कार, नकदी, फ्लैट और महंगे उपहारों की मांग पर अधिक टिकती दिखाई देती है। यह केवल सामाजिक विडम्बना नहीं बल्कि मानवीय संवेदनाओं के पतन का संकेत है।

यदि पुराने समय की बात करें तो दहेज का स्वरूप आज जितना भयावह नहीं था। उस समय माता-पिता अपनी बेटी को प्रेमपूर्वक वस्त्र, आभूषण और घरेलू उपयोग की आवश्यक वस्तुएं देकर विदा करते थे ताकि वह अपने नए जीवन की शुरुआत सहजता और सम्मान के साथ कर सके। यह प्रेम और आशीर्वाद का प्रतीक था, किसी प्रकार की मांग का नहीं। उस दौर में रिश्तों में अपनापन था, परिवारों में संवेदनाएं जीवित थीं और विवाह को दो परिवारों के पवित्र मिलन के रूप में देखा जाता था।

लेकिन धीरे-धीरे समाज की सोच बदलती गई। आधुनिकता की अंधी दौड़, बढ़ती भौतिकवादी मानसिकता और सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने दहेज जैसी परम्परा को कुरीति में बदल दिया। अब विवाह कई लोगों के लिए सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ कमाने का माध्यम बन गया है।

लड़के की नौकरी, वेतन और सामाजिक स्थिति के आधार पर दहेज की रकम तय की जाने लगी। कहीं कार की मांग होती है, कहीं फ्लैट की और कहीं लाखों रुपए नकद तथा महंगे आभूषणों की। यह स्थिति विवाह जैसे पवित्र संस्कार को व्यापार में बदल रही है।

सबसे दुखद बात यह है कि शिक्षित और सम्पन्न समाज भी इस मानसिकता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। आए दिन दहेज प्रताड़ना, आत्महत्या और दहेज हत्या की घटनाएं सामने आती हैं। कई बेटियां शादी के कुछ महीनों बाद ही मानसिक और शारीरिक अत्याचार का शिकार हो जाती हैं। उन्हें तानों, अपमान और हिंसा के बीच जीवन बिताने के लिए मजबूर किया जाता है। कई बार यह प्रताड़ना इतनी भयावह हो जाती है कि उनकी जान तक ले ली जाती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार देश में प्रत्येक वर्ष हजारों महिलाएं दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्या की शिकार होती हैं। यह केवल आंकड़े नहीं बल्कि उन परिवारों का दर्द है जिनकी बेटियां खुशहाल जीवन का सपना लेकर ससुराल गईं, लेकिन प्रताड़ना का शिकार बन गईं।

हालांकि इस गम्भीर सामाजिक समस्या का दूसरा पक्ष भी है, जिस पर समाज को संतुलित दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। बदलते समय के साथ पारिवारिक और व्यवहारिक संस्कारों में कमी भी देखने को मिल रही है। आज माता-पिता बच्चों को उच्च शिक्षा और बड़ी डिग्रियां तो दिलाना चाहते हैं, लेकिन सामाजिक, व्यवहारिक और पारिवारिक जीवन की शिक्षा उतनी गम्भीरता से नहीं दे पा रहे। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। कई बार छोटी-छोटी बातों में असहिष्णुता, क्रोध और अधैर्य रिश्तों में दूरी पैदा कर देते हैं। परिणामस्वरूप सामान्य मतभेद भी गम्भीर विवादों का रूप ले लेते हैं।

पहले परिवारों में बेटियों को केवल पढ़ाई ही नहीं बल्कि रिश्तों को निभाने, बड़ों का सम्मान करने, धैर्य रखने और परिवार को साथ लेकर चलने की सीख भी दी जाती थी। वे घरेलू कार्यों, खान-पान, कला-कौशल और व्यवहारिक जीवन में दक्ष होती थीं, जिससे नए परिवार में सामंजस्य बैठाने में आसानी होती थी। उस समय शिक्षा भले सीमित थी, लेकिन सामाजिक समझ और जीवन मूल्यों की गहराई अधिक थी। छोटे-मोटे विवादों को परिवार और समाज आपसी समझ से सुलझा लिया करते थे। बुजुर्गों की सलाह और सामाजिक मर्यादा कई टूटते रिश्तों को बचा लिया करती थी।

आज परिस्थितियां बदल गई हैं। कई बार बच्चों के जिद्दी स्वभाव, भावनात्मक असंतुलन और अधैर्य को समय रहते समझने तथा सुधारने का प्रयास नहीं किया जाता। कुछ मामलों में अच्छे और संस्कारी परिवार भी आपसी सामंजस्य की कमी के कारण तनाव का केंद्र बन जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि दहेज उत्पीड़न जैसी घटनाओं को उचित ठहराया जाए बल्कि यह समझना आवश्यक है कि सफल वैवाहिक जीवन केवल अधिकारों से नहीं बल्कि समझ, त्याग, धैर्य और आपसी सम्मान से चलता है।

समाज में बेटी और बहू के बीच भेदभाव करने वाली मानसिकता भी इस समस्या को और गहरा करती है। जो लोग अपनी बेटी के लिए सम्मान, सुरक्षा और खुशहाल जीवन चाहते हैं, वही कई बार किसी दूसरे की बेटी यानी अपनी बहू के साथ कठोर व्यवहार करते दिखाई देते हैं। सच्चाई यह है कि बेटी किसी और के घर की बहू बनती है और बहू भी किसी की बेटी होती है। इन दोनों में अंतर करना केवल रिश्तों का नहीं बल्कि मानवता और संस्कारों का भी अपमान है।

भारतीय कानून ने दहेज प्रथा को गम्भीर अपराध माना है। दहेज हत्या और दहेज उत्पीड़न से जुड़े मामलों में कठोर दंड का प्रावधान है। न्यायालयों ने समय-समय पर यह स्पष्ट किया है कि दहेज के नाम पर किसी भी प्रकार का अत्याचार अस्वीकार्य है। साथ ही न्यायालयों ने यह भी कहा है कि कानून का उपयोग न्याय के लिए होना चाहिए, न कि प्रतिशोध के लिए। हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने कहा- बेटियां दहेज के लिए मरने हेतु नहीं बल्कि सम्मान और खुशहाल जीवन जीने के लिए पैदा होती हैं।

वास्तव में दहेज केवल कानूनी अपराध नहीं बल्कि सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक पतन का प्रतीक है। धन से आलीशान मकान बनाए जा सकते हैं, लेकिन प्रेम, विश्वास और संस्कारों के बिना परिवार नहीं बसाए जा सकते। आज आवश्यकता केवल कानून के भय की नहीं बल्कि समाज के आत्ममंथन की है। माता-पिता को अपने बेटों और बेटियों दोनों को समान रूप से संस्कार, संवेदनशीलता, धैर्य और जिम्मेदारी की शिक्षा देनी होगी। विवाह किसी एक पक्ष की जीत या हार नहीं बल्कि दो परिवारों और दो संस्कृतियों का पवित्र मिलन है। जब वर और वधू दोनों पक्ष प्रेम, समझ, सहनशीलता और सम्मान के साथ रिश्तों को निभाने का प्रयास करेंगे, तभी दहेज जैसी कुप्रथाओं से मुक्त स्वस्थ और संस्कारित समाज का निर्माण सम्भव हो सकेगा।

संघ का घर वापसी अभियान केवल धार्मिक गतिविधि नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक संगठन और राष्ट्रवादी विचारधारा का मिश्रित रूप बन चुका है। अमृतसर, पटियाला, होशियारपुर, गुरदासपुर और सीमावर्ती जिलों में संघ यह अभियान चला रहा है।

पंजाब में सिखों की घर वापसी

भारत विविधताओं और सह-अस्तित्व की भूमि रहा है, जहां विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और परम्पराओं ने मिलकर भारतीय समाज की संरचना को मजबूत बनाया है, परंतु समय-समय पर धार्मिक परिवर्तन, सांस्कृतिक पहचान तथा सामाजिक असंतुलन जैसे विषय राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनते रहे हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा उससे जुड़े संगठनों द्वारा चलाया जा रहा घर वापसी अभियान इसी विमर्श का एक महत्वपूर्ण पहलू है। पंजाब जैसे सीमावर्ती और संवेदनशील राज्य में यह अभियान विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है।

घर वापसी का अर्थ उन लोगों को पुनः हिंदू धर्म अथवा अपनी मूल सांस्कृतिक परम्परा से जोड़ना बताया जाता है, जिन्होंने विभिन्न कारणों से अन्य धर्म अपना लिया। संघ परिवार का कहना है कि यह किसी नए धर्म में परिवर्तन नहीं बल्कि अपने पूर्वजों की सांस्कृतिक पहचान की ओर वापसी है। पंजाब में विश्व हिंदू परिषद, धर्म जागरण मंच, सेवा भारती तथा अन्य संगठनों द्वारा यह अभियान विभिन्न जिलों में चलाया गया। संघ का दावा है कि राज्य के अनेक क्षेत्रों में हजारों लोगों ने स्वेच्छा से पुनः हिंदू परम्परा को स्वीकार किया।

सचिन तिवारी

पंजाब का इतिहास धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोविंद सिंह तक की परम्परा ने मानवता, समानता और राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया। विभाजन के बाद पंजाब ने आतंकवाद, सीमापार प्रभाव और साम्प्रदायिक तनाव जैसी अनेक चुनौतियों का सामना किया। इसी कारण संघ द्वारा चलाया जा रहा घर वापसी अभियान केवल धार्मिक गतिविधि नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

अमृतसर जिला इस अभियान का प्रमुख केंद्र माना गया। धर्म जागरण मंच द्वारा गुरु-की-वडाली क्षेत्र में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहां कई परिवारों की घर वापसी कराए जाने का दावा किया गया। संघ के अनुसार अमृतसर के ग्रामीण एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में ईसाई मिशनरी गतिविधियों के प्रभाव को रोकने हेतु यह अभियान चलाया गया। अनुमानतः यहां 250 से अधिक परिवारों तथा लगभग 1200 से 1500 लोगों को पुनः हिंदू परम्परा से जोड़ा गया। इसके अतिरिक्त 40 से अधिक धार्मिक सभाएं तथा लगभग 15 नई शाखाएं स्थापित की गईं।

पटियाला जिले में संघ ने सांस्कृतिक जागरण और हिंदू एकता पर विशेष बल दिया। यहां

युवाओं के लिए धार्मिक जागरूकता शिविर, धर्म रक्षा सभाएं तथा सांस्कृतिक सम्मेलन आयोजित किए गए। दलित एवं पिछड़े वर्गों तक पहुंच बनाने के लिए व्यापक सम्पर्क अभियान चलाया गया। संघ के अनुसार पटियाला में 100 से अधिक गांवों में अभियान चलाया गया तथा लगभग 800 लोगों ने घर वापसी की। इसके साथ ही 500 से अधिक स्वयंसेवक विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़े।

होशियारपुर और दसूया क्षेत्र में भी संघ परिवार की गतिविधियां काफी सक्रिय रहीं। यह क्षेत्र ईसाई मिशनरी प्रभाव वाले क्षेत्रों में माना जाता है। धर्म जागरण समन्वय विभाग द्वारा यहां अनेक सेवा शिविर, धार्मिक कार्यक्रम और जनजागरण अभियान चलाए गए। संघ का दावा है कि लगभग 300 परिवारों और 1800 से अधिक लोगों ने स्वेच्छा से पुनः हिंदू धर्म स्वीकार किया। गरीब एवं पिछड़े वर्गों में सहायता कार्यों के माध्यम से सामाजिक सम्पर्क बढ़ाने का प्रयास भी किया गया।

सीमावर्ती जिला गुरदासपुर में संघ ने राष्ट्रवादी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया। यहां शाखाओं का विस्तार किया गया तथा युवाओं को राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने के लिए शिविर लगाए गए। अनुमानतः जिले में 70 से अधिक शाखाएं सक्रिय हुईं और 1200 से अधिक स्वयंसेवक संगठन से जुड़े। इसके अतिरिक्त 80 से अधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

तरनतारन और खेमकरण जैसे भारत-पाक सीमा से जुड़े क्षेत्रों में संघ ने सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक सुरक्षा को अभियान का मुख्य आधार बनाया। यहां ग्रामीण युवाओं को शाखाओं से जोड़ने, धार्मिक यात्राओं और सामाजिक सभाओं के माध्यम से राष्ट्रवादी चेतना विकसित करने का प्रयास किया गया। इन क्षेत्रों में लगभग 50 शाखाएं तथा 900 से अधिक युवा स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

जालंधर जिले में सेवा भारती और अन्य संगठनों द्वारा शिक्षा, सहायता और सामाजिक समरसता कार्यक्रम चलाए गए। दलित बस्तियों में सम्पर्क अभियान, सामूहिक हवन और धर्म सभाओं के माध्यम से लोगों को जोड़ा गया। संघ के अनुसार यहां 150 से अधिक परिवारों ने घर वापसी अभियान में भाग लिया।

पंजाब में संघ द्वारा चलाए गए इन अभियानों का मुख्य उद्देश्य धर्मांतरण को रोकना, सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना तथा हिंदू समाज को संगठित करना बताया गया। संघ का तर्क है कि कई स्थानों पर आर्थिक लालच, सामाजिक दबाव अथवा अन्य कारणों से धर्म परिवर्तन कराया गया, इसलिए घर वापसी अभियान के माध्यम से लोगों को उनकी मूल सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रवादी चेतना और सामाजिक संगठन को भी इस अभियान से जोड़ा गया।

पंजाब जैसे संवेदनशील राज्य में यह विषय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यहां धार्मिक पहचान सामाजिक और राजनीतिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई है। ऐसी स्थिति में यह कार्यक्रम और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। आज जब भारत के सम्मुख डेमोग्राफिक परिवर्तन का एक बहुत बड़ा संकट सामने खड़ा दिख रहा है, जो सीधे भारत की मूल पहचान पर एवं उसके सांस्कृतिक आधार पर हमला है, उस स्थिति में इस तरह का अभियान कहीं ना कहीं नागरिक समाज को अपने मूल्यों के प्रति सतर्क करने तथा उनमें धर्म संस्कृति के प्रति गौरव जागृत करने का कार्य कर रहा है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

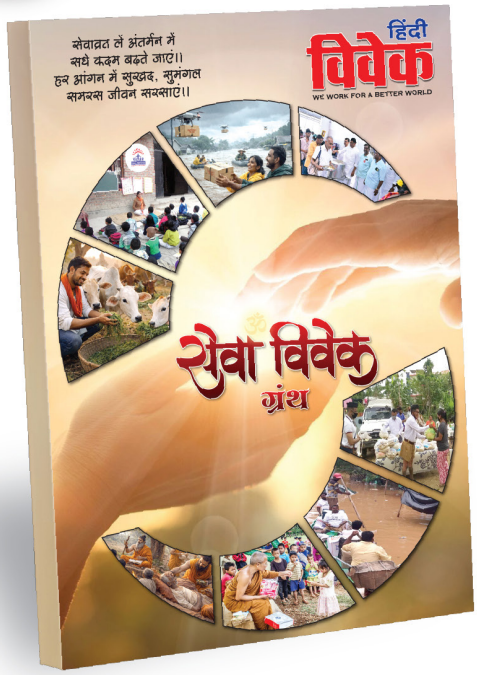

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

परिवर्तन

बंगाल में भाजपा की नई सरकार बनने के साथ ही राष्ट्रवादी सोच, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राज्य के विकास को एक नई गति मिल रही है, जिससे राज्य की राजनीतिक संस्कृति और प्रशासनिक प्राथमिकताओं में व्यापक परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

बंगाल परिवर्तन की ओर

पश्चिम बंगाल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, साहित्य, कला और राजनीतिक चेतना के लिए सदैव प्रसिद्ध रहा है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ ठाकुर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसी महान विभूतियों ने इस भूमि को राष्ट्रीय गौरव प्रदान किया। स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधारों में बंगाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में राज्य राजनीतिक हिंसा, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, उद्योगों के पलायन और तुष्टीकरण की राजनीति जैसी चुनौतियों से जूझता रहा। अप्रैल 2026 के विधानसभा चुनावों के बाद हुए सत्ता परिवर्तन ने बंगाल में एक नए वैचारिक और प्रशासनिक दौर की शुरुआत का संकेत दिया है। भाजपा के नेतृत्व में बनी नई सरकार राष्ट्रवादी सोच, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और विकास आधारित राजनीति को आगे बढ़ाने का दावा कर रही है, जिससे राज्य की राजनीतिक संस्कृति और प्रशासनिक प्राथमिकताओं में व्यापक परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

डॉ. संतोष झा

नई सरकार के गठन के बाद राष्ट्रवादी प्रतीकों और सांस्कृतिक पहचान को विशेष महत्व दिया जा रहा है। 'वंदे मातरम्' और 'भारत माता की जय' जैसे नारों को सार्वजनिक जीवन में सम्मानजनक स्थान देने की पहल की गई है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और मदरसों में राष्ट्रगीत तथा राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाने को सरकार राष्ट्रनिर्माण का महत्वपूर्ण

हिस्सा मान रही है। सरकार का कहना है कि नई पीढ़ी में राष्ट्रीय एकता, संवैधानिक मूल्यों और भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति सम्मान विकसित करना आवश्यक है। वंदे मातरम् स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरक ध्वनि रहा है। इसे धार्मिक दृष्टि से नहीं बल्कि राष्ट्रीय चेतना और मातृभूमि के सम्मान के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए।

नई सरकार ने सांस्कृतिक आयोजनों और धार्मिक पर्वों को लेकर नई नीतिगत सोच प्रस्तुत की है। बकरीद पर सीमित सार्वजनिक अवकाश, सार्वजनिक रूप से गाय की कुर्बानी पर रोक तथा सड़कों पर नमाज पढ़ने पर नियंत्रण सम्बंधी निर्देशों को सरकार सामाजिक संवेदनशीलता, सार्वजनिक व्यवस्था और कानून-व्यवस्था से जोड़कर देख रही है। समर्थकों के अनुसार भारतीय समाज में गाय सांस्कृतिक सम्मान और आस्था का प्रतीक है, जबकि सार्वजनिक स्थलों के उपयोग में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। वहीं विपक्ष इन कदमों को राजनीतिक संदेश देने की रणनीति मानता है। साथ ही स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्रनायकों के विचारों को पुनः प्रमुखता दी जा रही है।

सत्ता परिवर्तन के बाद सबसे अधिक चर्चा ओबीसी आरक्षण में बदलाव को लेकर हुई। नई सरकार ने ओबीसी आरक्षण को 17 प्रतिशत से घटाकर 7 प्रतिशत कर दिया, जिसे वर्ष 2010 से पहले की स्थिति के अनुरूप बताया जा रहा है। सरकार का कहना है कि यह निर्णय न्यायालयीन टिप्पणियों, संवैधानिक मर्यादाओं और आरक्षण व्यवस्था में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लिया गया है। सत्ता पक्ष का मानना है कि पूर्व में आरक्षण नीति का उपयोग वोट बैंक की राजनीति के लिए किया गया, जिससे वास्तविक लाभार्थियों के अधिकार प्रभावित हुए। वहीं विपक्ष इसे सामाजिक न्याय के विरुद्ध कदम बताते हुए पिछड़े वर्गों के अधिकारों को कमजोर करने का आरोप लगा रहा है। यह विवाद अब सामाजिक न्याय, संवैधानिक व्यवस्था और राजनीतिक तुष्टीकरण के बीच संतुलन की व्यापक बहस का रूप ले चुका है।

पिछले वर्षों में पश्चिम बंगाल राजनीतिक हिंसा, प्रशासनिक पक्षपात और भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण राष्ट्रीय बहस का केंद्र रहा। नई सरकार ने कानून-व्यवस्था को मजबूत करने, राजनीतिक हिंसा पर नियंत्रण तथा माफिया तंत्र और भ्रष्टाचार के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने का संकल्प किया है। प्रशासनिक पारदर्शिता और जवाबदेही को भी प्राथमिकता दी जा रही है। बांग्लादेश सीमा से जुड़े अवैध घुसपैठ, सीमा सुरक्षा और जनसांख्यिकीय परिवर्तन जैसे मुद्दों पर सरकार नागरिकता संशोधन अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन और सीमा प्रबंधन को सुदृढ़ करने की बात कर रही है। सरकार इसे राज्य की सामाजिक-सांस्कृतिक सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम मानते हैं, जबकि विपक्ष इसे राजनीतिक ध्रुवीकरण से जोड़कर देखता है।

नई सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को गति देना है। कभी देश का प्रमुख औद्योगिक केंद्र रहा पश्चिम बंगाल पिछले वर्षों में निवेश की कमी और औद्योगिक पिछड़ेपन से प्रभावित रहा है। सरकार ने अपने शुरुआती दिनों में ही औद्योगिक पुनर्जागरण की दिशा में संकेत देते हुए निवेश आकर्षित करने, उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने और केंद्र की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर देने की बात कही है। प्रधानमंत्री आवास

योजना, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, जल जीवन मिशन और पीएम किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं को अधिक पारदर्शिता और दक्षता के साथ लागू करने का आश्वासन दिया जा रहा है।

आधारभूत ढांचे के विकास के अंतर्गत कोलकाता मेट्रो विस्तार, राष्ट्रीय राजमार्गों, बंदरगाहों और औद्योगिक पार्कों के विकास पर विशेष ध्यान देने की बात सामने आई है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि-प्रसंस्करण, पर्यटन और स्टार्टअप क्षेत्र को नई अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार के रूप में विकसित करने की योजना बनाई जा रही है। दार्जिलिंग, सुंदरबन, दीघा और शांतिनिकेतन जैसे पर्यटन स्थलों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने के प्रयासों की भी चर्चा है, जिससे स्थानीय रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

आने वाले समय में यह स्पष्ट होगा कि सरकार कानून-व्यवस्था, निवेश, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में कितने प्रभावी परिणाम ला पाती है। यदि इन क्षेत्रों में ठोस प्रगति होती है तो बंगाल एक बार फिर देश के अग्रणी राज्यों में अपनी मजबूत पहचान स्थापित कर सकता है।

दुष्परिणाम

प्रशांत महासागर में उत्पन्न होने वाला अल नीनो संकट आज वैश्विक जलवायु परिवर्तन की बहस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। यह केवल महासागर की सतह के तापमान में बढ़लाव भर नहीं है बल्कि पृथ्वी की जलवायु, पर्यावरण, कृषि, अर्थव्यवस्था और मानव जीवन को प्रभावित करने वाली एक व्यापक प्रक्रिया है।

डॉ. दीपक कोहली

प्रशांत महासागर में अल नीनो संकट

जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण और भारत पर बढ़ता प्रभाव

प्रशांत महासागर में समय-समय पर विकसित होने वाली 'अल नीनो' घटना आज केवल एक समुद्री परिघटना नहीं रह गई है बल्कि यह वैश्विक जलवायु, पर्यावरण और मानव जीवन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक बन चुकी है। 'अल नीनो' एक प्राकृतिक महासागरीय-वायुमंडलीय प्रक्रिया है, जिसमें भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी भाग का समुद्री सतही जल सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप विश्वभर की मौसम प्रणालियों, वर्षा चक्रों और तापमान वितरण में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हाल के वर्षों में दुनिया भर में बढ़ती गर्मी, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और चरम मौसमीय घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति ने 'अल नीनो' को पुनः चर्चा के केंद्र में ला दिया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि मानवजनित जलवायु परिवर्तन और अल नीनो के बीच जटिल अंतःक्रिया वैश्विक मौसम प्रणालियों को पहले की तुलना में अधिक अस्थिर बना रही है।

'अल नीनो' एक प्राकृतिक जलवायु घटना है, जो तब उत्पन्न होती है जब भूमध्यरेखीय पूर्वी और मध्य प्रशांत महासागर की सतही जलराशि सामान्य से अधिक गर्म हो जाती है। सामान्य परिस्थितियों में पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली व्यापारिक पवनें गर्म जल को एशिया और ऑस्ट्रेलिया की दिशा में धकेलती हैं, किंतु अल नीनो के दौरान ये पवन कमजोर पड़ जाती हैं। परिणामस्वरूप गर्म पानी पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में फैल जाता है और वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न करता है।

यद्यपि अल नीनो एक प्राकृतिक चक्र का हिस्सा है, लेकिन वैश्विक तापवृद्धि के कारण इसके प्रभाव अधिक तीव्र होते जा रहे हैं। पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है, महासागर अतिरिक्त ऊष्मा को अवशोषित कर रहे हैं और समुद्री सतह का तापमान रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच रहा है। ऐसे में जब अल नीनो सक्रिय होता है तो पहले से गर्म वातावरण और महासागर इसके प्रभावों को और अधिक गम्भीर बना

देते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि भविष्य में अत्यधिक शक्तिशाली अल नीनो घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता दोनों बढ़ सकती हैं।

जलवायु परिवर्तन पर इसके प्रभाव अत्यंत व्यापक हैं। अल नीनो के दौरान विश्व के अनेक क्षेत्रों में सामान्य वर्षा चक्र बाधित हो जाता है। दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्सों में अत्यधिक वर्षा और बाढ़ की स्थिति बनती है, जबकि ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कई क्षेत्रों में सूखा बढ़ जाता है। अफ्रीका के कुछ भागों में खाद्य संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वैश्विक स्तर पर औसत तापमान में वृद्धि दर्ज की जाती है और कई बार अल नीनो पृथ्वी के सबसे गर्म वर्षों में शामिल हो जाते हैं।

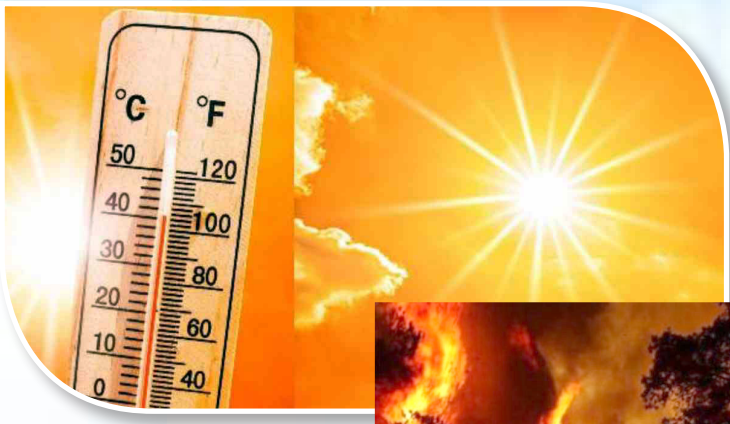

पर्यावरणीय दृष्टि से भी अल नीनो गम्भीर चिंताओं को जन्म देता है। समुद्री जल के तापमान में वृद्धि से प्रवाल भित्तियों (कोरल रीफ) पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अत्यधिक गर्म जल के कारण कोरल ब्लीचिंग की घटनाएं बढ़ जाती हैं, जिससे समुद्री जैव विविधता को हानि पहुंचती है। अनेक समुद्री जीवों के भोजन और प्रजनन चक्र प्रभावित होते हैं। मत्स्य संसाधनों में कमी आ सकती है, जिसका असर लाखों लोगों की आजीविका पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त सूखे की स्थिति वनाग्नि की घटनाओं को बढ़ावा देती है, जिससे जंगलों, वन्यजीवों और पारिस्थितिक तंत्रों को भारी क्षति पहुंचती है।

भारत भी अल नीनो के प्रभावों से अछूता नहीं है। भारतीय मानसून और प्रशांत महासागर की परिस्थितियों के बीच गहरा सम्बंध माना जाता है। सामान्यतः अल नीनो के वर्षों में मानसूनी वर्षा कमजोर पड़ सकती है, हालांकि हर बार इसका प्रभाव समान नहीं होता। मानसून में कमी कृषि उत्पादन, जल संसाधनों और खाद्य सुरक्षा पर दबाव बढ़ा सकती है। देश के अनेक क्षेत्रों में सूखे जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में असामान्य वर्षा भी देखने को मिल सकती है।

जहां तक पूरे भारत में अनुभव की जा रही भीषण गर्मी और मौसम के बदलते स्वरूप का प्रश्न है तो इसके पीछे केवल अल नीनो ही जिम्मेदार नहीं है, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण कारक अवश्य है। वर्तमान में वैश्विक तापवृद्धि, शहरीकरण, हरित क्षेत्र में कमी, हीट आइलैंड प्रभाव तथा जलवायु परिवर्तन के अन्य कारकों के साथ मिलकर अल नीनो गर्मी की तीव्रता को और बढ़ा सकता है। यही कारण है कि हाल के वर्षों में लम्बे समय तक हीटवेव, असामान्य तापमान, अनियमित वर्षा और मौसम की चरम घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है। इसलिए भारत में बढ़ती गर्मी को आंशिक रूप से अल नीनो का संकेत माना जा सकता है, किंतु इसे व्यापक जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में समझना अधिक उचित होगा।

वर्ष 2025 और वर्तमान 2026 में भी वैश्विक जलवायु पर अल नीनो तथा उससे जुड़ी महासागरीय-वायुमंडलीय प्रक्रियाओं के प्रभावों की चर्चा जारी रही। यद्यपि 2024 के बाद प्रशांत महासागर की परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन देखने को मिले, फिर भी वैश्विक तापमान लगातार ऊंचे स्तर पर बना रहा। भारत सहित विश्व के अनेक क्षेत्रों में असामान्य गर्मी, अनियमित वर्षा, अचानक बाढ़, लम्बे शुष्क दौर तथा चरम मौसमीय घटनाओं ने यह संकेत दिया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अब अधिक स्पष्ट रूप से सामने आ रहे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि अल नीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि मिलकर मौसम प्रणालियों को अधिक जटिल बना रही हैं।

वर्ष 2025-26 के दौरान भारत के कई हिस्सों में हीटवेव की तीव्रता, बदलते मानसूनी पैटर्न और जल संसाधनों पर बढ़ते दबाव ने यह रेखांकित किया है कि जलवायु अनुकूलन, आपदा प्रबंधन, जल संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण की नीतियों को प्राथमिकता दी जाए।

●●●

आधुनिकता या आत्मविस्मृति

आधुनिकता की इस दौड़ में लोग एक नई पहचान बनाने में लगे हैं। पुरानी परम्पराएं, संस्कृति, मर्यादा आदि को लोग अब पीछे छोड़ रहे हैं। नई तकनीक ने लोगों की जिंदगी को और भी अधिक सुगम, सरल व सुविधाजनक बना दिया है, जिससे हर लोग इसके पीछे भाग रहे हैं।

युग बदलता है, समय बदलता है, समाज बदलता है, विचार बदलते हैं और साथ ही साथ बदलती हैं परम्पराएं, लेकिन आधुनिकता की चकाचौंध में बदलने लगी है मानव सभ्यता की सोच। नई तकनीक, शिक्षा, विज्ञान ने जीवन को अधिक सुविधाजनक और उन्नत बनाया है, लेकिन जब आधुनिकता के नाम पर मनुष्य अपनी संस्कृति, मर्यादा और पहचान को ही बोझ समझने लगे तो इसे क्या कहा जाए। आधुनिकता की चकाचौंध में जब हमारी संस्कृति, हमारी परम्परा हमारे संस्कार को लोग पालन करने में हिचकिचाएं तो हमारे विकास का पहिया ही रुक जाएगा। कहा जाता है कि संस्कार, मर्यादा, सादगी व शालीनता ही महिलाओं का गहना माना जाता है, आज वही समाज बाहरी आकर्षण और दिखावे को सफलता और स्वतंत्रता का मापदंड मानने लगा है। यह कहना उचित नहीं होगा कि पुरानी हर परम्परा पूर्णतः सही थी या हर आधुनिक विचार गलत है। समाज को समय के अनुसार बदलना आवश्यक है। महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और समान अधिकार आधुनिक समाज की सकारात्मक उपलब्धियां हैं।

वह पीढ़ी, जब मर्यादा को आभूषण मानते थे। उस समय संस्कार केवल पुस्तकों में नहीं, व्यवहार में दिखाई देते थे।

पहले की वृद्धावस्था में भी महिलाएं तक अपने जेठ के सामने अपना मुख नहीं दिखाती थीं। यह उनका भय नहीं था बल्कि यह दर्शाता था कि यह उनके प्रति सम्मान है। वह बंधन नहीं था, वह संस्कार था। धर्म और संस्कृति केवल भाषणों से नहीं टिकतीं, उनका पालन करने से जीवित रहती हैं।

आज अनेक लोग भारतीय प्रतीकों और परम्पराओं का उपहास करते दिखाई देते हैं। माथे की बिंदी, तिलक, पारम्परिक वस्त्र या संस्कृतिपूर्ण व्यवहार उन्हें पिछड़ापन प्रतीत होता है, जबकि यही प्रतीक हमारी सांस्कृतिक पहचान के आधार हैं। भारतीय संस्कृति में तिलक केवल धार्मिक चिह्न नहीं बल्कि आत्मिक चेतना और सम्मान का प्रतीक माना गया है।

ब्रिजेश शुक्ला

यदि आधुनिकता का अर्थ अपनी संस्कृति को त्याग देना है तो फिर दुनिया के विकसित देश अपनी परम्पराओं और राष्ट्रीय पहचान पर इतना गर्व क्यों करते हैं? जापान आधुनिक होने के बाद भी अपनी संस्कृति नहीं भूला। यूरोप अपने पारम्परिक उत्सवों और जीवन मूल्यों को आज भी संजोए हुए हैं। फिर भारत में ही अपनी जड़ों से दूर जाने को प्रगतिशीलता क्यों माना जाए?

वास्तविक आधुनिकता वही है, जो मनुष्य को विवेकवान बनाए, उसे वैज्ञानिक सोच दे, लेकिन साथ ही उसे अपनी सभ्यता और संस्कारों से भी जोड़े रखे। आधुनिकता का उद्देश्य चरित्र और संस्कृति को नष्ट करना नहीं बल्कि जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि नई पीढ़ी को केवल आधुनिक शिक्षा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों का ज्ञान भी दिया जाए। उन्हें यह समझाना होगा कि संस्कार किसी बंधन का नाम नहीं बल्कि समाज को संतुलित और सभ्य बनाए रखने की शक्ति हैं।

कोई भी संस्कार व परम्परा एक लम्बे समय के बाद अपनी शक्ल लेती है। इन संस्कारों व परम्पराओं में लोग पल्लवित व पुष्पित होते हैं। यदि कोई समाज अपनी परम्पराओं, भाषा, प्रतीकों और संस्कृति पर गर्व करना छोड़ देता है तो धीरे-धीरे उसकी पहचान मिटने लगती है। इसलिए आवश्यक है कि हम आधुनिकता को अपनाएं, लेकिन आत्मविस्मृति से बचें क्योंकि विकास वही सार्थक है, जो हमें ऊंचाइयों तक ले जाए और साथ ही हमारी जड़ों को भी सुरक्षित रखे। ●●●

बुलडोजर न्याय का बढ़ता चलन

आजकल देशभर में बुलडोजर की डिमांड खूब बढ़ी हुई है। ये डिमांड इसलिए भी है कि लोगों को लगने लगा है कि कोई और न्याय करे न करे, बुलडोजर अवश्य न्याय करेगा। कहीं और से न्याय मिले न मिले बुलडोजर बाबा अवश्य न्याय करेंगे।

चाहे मामला बांद्रा की अवैध मस्जिद का हो या कोलकाता स्टेशन या कोलकाता एयरपोर्ट पर तान दी गई मस्जिद को हटाने का। सहायता के लिए बुलडोजर बाबा की पुकार सब ओर से आ रही है। लगता है बुलडोजर ही सारी समस्याओं का समाधान निकाल सकता है। उत्तर प्रदेश के योगी बाबाजी का जो बुलडोजर चला तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा। पूरे देश में धूम मची है बाबाजी के बुलडोजर की। सारे आतताइयों के ठिकानों को ध्वस्त करने में लगा है बुलडोजर। योगी आदित्यनाथ खुद भी बुलडोजर बाबा के नाम से मशहूर हो चुके हैं। जैसे अकेले बुलडोजर बाबा ही दुष्टों का दमन दलन करने के लिए काफी नहीं थे तो पूर्वांचल में वो हिमंता भी इसी पैटर्न पर बुलडोजर लेकर अवैध कब्जों के पीछे हाथ धोकर पड़ गए हैं और सारे अवैध कब्जों को नेस्तनाबूद करने में पूरी ताकत से भिड़ गए हैं, उन्हें कोई रोकने टोकने वाला भी नहीं। गोगोई फोगोई तो अब चिल्लाने की हालत में भी नहीं है। अब यूपी-असम से चला बुलडोजर बांद्रा-बंगाल तक पहुंच चुका है। बांद्रा से बंगाल तक बड़े पैमानों पर हो चुके अवैध कब्जों को बुलडोजर से हटाने की मुहिम शुरू हो चुकी है। अतिक्रमणकारी कोर्ट भी जा रहे हैं बुलडोजर मुहिम के विरुद्ध।

बांद्रा से बंगाल तक की बुलडोजर मुहिम में सर्वाधिक चिंता की बात देशभर में बदल रही डेमोग्राफी है। कोलकाता को पहले कम्युनिस्टों और बाद में टीएमसी सहित बांग्लादेशी घुसपैठियों और रोहिंग्याओं ने दुनिया का सबसे बड़ा कबाड़खाना बना डाला है और यही हाल मुंबई के बांद्रा से लगकर दुनिया की सबसे बड़ी स्लम बस्ती धारावी का भी है। जहां बिहार, यूपी, बंगाल के 40-50 साल पहले यहां आ बसा एक परिवार अपने 50 लोगों का कुनबा लेकर जम जाते, ऐसे 50-50 घुसपैठिएं कब 50 लाख हो जाते हैं, न म्युनिसिपालिटी को पता चलता और न राशन विभाग न आधार कार्ड वालों को कि यहां किस तरह से धार्मिक बदलाव हो रहे हैं। बुलडोजर इस डेमोग्राफिक असंतुलन को समाप्त करने के लिए कितने जिम्मेदार हैं। बुलडोजर अपरिहार्य हो चुके हैं देश के सौहार्द्र और धार्मिक असंतुलन को बनाए रखने के लिए। कोर्ट-कचहरियां जो न्याय नहीं दिला पातीं वो इन दिनों बुलडोजरों से मांगा जा रहा है और बाबा, हिमंता, देवेंद्र, शुभेंदु के बुलडोजर इस तरह त्वरित फौरी न्याय देने में पूरे दमखम से जुटे हैं।

बुलडोजर बाबा की जय हो!

मुकेश जोशी

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

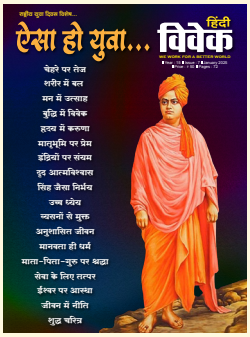

हिंदी **विवेक**

" We Work For A Better World"

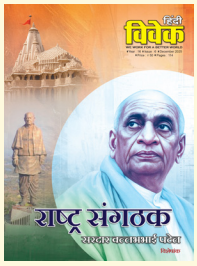

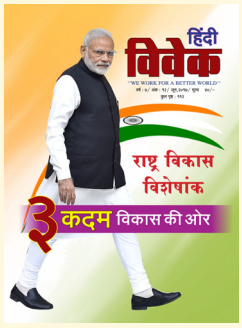

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

सान्या बनीं पहली महिला फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर

जब मन में कुछ करने की लगन हो तो समय, परिस्थिति कभी बाधा नहीं बनती। जी हां, आज महिलाओं ने भी उन ऊंचाईयों को छूआ है, जो सफलता का अंतिम पायदान हैं। महिलाओं ने उन क्षेत्रों में भी अपना दमखम दिखाया है जो केवल पुरूषों का क्षेत्र माना जाता था। अंतरिक्ष हो या फिर आसमान या लड़ाकू विमान उड़ाने की बात हो, सभी जगहों पर महिलाओं ने अपनी दावेदारी जताई है और अपनी जगह बनाई है। इनमें से एक हैं सान्या, जो भारतीय वायुसेना में भारत की पहली क्वालिफाइड फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर बनीं। इन्होंने प्रतिष्ठित कैटेगरी-ए क्वालिफाइड फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर की योग्यता प्राप्त करके इतिहास रचा है, जो कि सैन्य विमान चालकों के लिए सर्वोच्च प्रशिक्षण योग्यता है। विदित हो कि कैट-ए क्यूएफआई की योग्यता भारतीय वायुसेना में अत्यंत कठिन और प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसे प्राप्त करने के लिए असाधारण उड़ान कौशल, तकनीकी दक्षता, मानसिक मजबूती और नेतृत्व क्षमता की आवश्यकता होती है।

यह केवल एक रैंक या प्रमाणपत्र नहीं बल्कि उस विश्वास का प्रतीक है जिसके आधार पर भविष्य के फाइटर पायलट और सैन्य विमान चालक तैयार किए जाते हैं। भारतीय वायुसेना में एक फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर (उड़ान शिक्षक) बनना अपने आप में बेहद चुनौतीपूर्ण काम है। एक क्वालिफाइड फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर का काम वायुसेना के युवा और नए पायलटों को लड़ाकू विमान या अन्य सैन्य विमान उड़ाने की बारीकियां सिखाना होता है।

इस योग्यता को प्राप्त करने के लिए पायलटों को कई कड़े परीक्षाओं, बेहद जटिल उड़ान परिस्थितियों, सटीक तकनीकी ज्ञान और बेहतरीन नेतृत्व क्षमता के दौर से गुजरना पड़ता है। फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर्स की श्रेणियों में 'कैट-ए' को सबसे शीर्ष और मास्टर इंस्ट्रक्टर का दर्जा दिया जाता है। अब स्क्वाड्रन लीडर सान्या अब वायुसेना के भावी जांबाजों को आसमान की जंग जीतने के पैंतरे सिखाएंगी और उनकी उड़ान तकनीकों को परखेंगी। ●●●

बांद्रा में रेलवे का अतिक्रमण हटाओ अभियान

विगत दिवस मुंबई के बांद्रा (पूर्व) स्थित गरीब नगर क्षेत्र में रेलवे की जमीन पर हुए अवैध निर्माणों को हटाने के लिए बॉम्बे हाईकोर्ट के आदेश पर एक बड़ा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। यह बुलडोजर कार्रवाई कड़ी सुरक्षा के बीच लगातार 6-7 दिनों तक चली, जिसमें सैकड़ों अवैध घरों और दो मस्जिदों को हटाया गया। इस दौरान कुछ जगह स्थानीय लोगों द्वारा विरोध प्रदर्शन और पथराव की घटनाएं भी हुईं, जिसके बाद भारी पुलिस बल (लगभग 1200 जवान) तैनात करना पड़ा। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि गरीब नगर क्षेत्र में रेलवे की जमीन पर लम्बे समय से अवैध कब्जे थे, जिसके कारण रेलवे परियोजनाओं और स्टेशन विस्तार कार्यों में दिक्कत आ रही थी। कई बार नोटिस जारी करने और चेतावनी देने के बाद यह कार्रवाई शुरू की गई।

दवा दुकानदारों की देशव्यापी हड़ताल

देशभर में दवा की ऑनलाइन बिक्री और ई-फार्मेसी के विरुद्ध विगत 20 मई को दवा दुकानों की हड़ताल हुई। विदित हो कि ऑल इंडिया ऑर्गनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स के आह्वान पर दवा दुकानों की हड़ताल हुई थी। इस हड़ताल के कारण देशभर में 15 लाख से अधिक मेडिकल स्टोर बंद रहे, लेकिन मरीजों की परेशानी को देखते हुए अस्पतालों के पास वाली कुछ आपातकालीन दवा की दुकानें खुली रखी गई थीं। फार्मा व्यापारियों का कहना है कि ई-फार्मेसी और ऑनलाइन दवा वितरण प्लेटफार्मों के बढ़ते कारोबार से ऑफलाइन (पारम्परिक) मेडिकल दुकानों का व्यापार बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। केमिस्टों का आरोप है कि बिना नियमों और उचित वेरिफिकेशन के धड़ल्ले से दवाइयां ऑनलाइन बेची जा रही हैं, जिसे रोकने के लिए सरकार सख्त कदम उठाए। हड़ताल का असर मुम्बई, दिल्ली सहित देश के अन्य हिस्सों में देखने को मिला और थोक दवा बाजार भी पूरी तरह से बंद रहे।

दुर्लभ पुस्तकों को पढ़ना हुआ आसान

यदि आप भी पुस्तक प्रेमी हैं, और पुरानी व दुर्लभ पुस्तकों को पढ़ने में आपकी दिलचस्पी है, तो अब आप उन पुस्तकों को बस एक क्लिक में ही पढ़ सकते हैं। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने एक अभियान चलाया है, जिसमें देश के ऐतिहासिक और दुर्लभ साहित्य को सहेजा जाएगा। इस अभियान के तहत 1941 से 1990 के बीच प्रकाशित पुस्तकों का डिजिटलीकरण किया जाएगा, इसमें 200 से अधिक की ई-पुस्तकों को निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा और मुद्रित पुस्तकें वेव्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी खरीदी जा सकेंगी।

ऐतिहासिक पुस्तकों का संरक्षण: प्रकाशन विभाग 1941 से 1990 के दशक की दुर्लभ एवं ऐतिहासिक पुस्तकों और अभिलेखों को डिजिटाइज करके सहेज रहा है।

ई-बुक्स की उपलब्धता: विभाग ने इंडिया ईयर बुक जैसी प्रमुख पुस्तकों सहित 227 ई-पुस्तकों को पाठकों के लिए निशुल्क डिजिटल प्रारूप में उपलब्ध कराया है।

बिक्री: पाठकों की सुविधा के लिए, प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित मुद्रित पुस्तकें अब वेव्स प्लेटफॉर्म से भी ऑनलाइन खरीदी जा सकती हैं।

आधिकारिक वेबसाइट: प्रकाशन विभाग से जुड़ी नवीनतम जानकारी, सरकारी प्रकाशनों की उपलब्धता और प्रकाशनों की सूची आप प्रकाशन विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर प्राप्त कर सकते हैं।

यह डिजिटल पहल भारत के समृद्ध साहित्य, इतिहास और संस्कृति को आम जनमानस तक डिजिटल रूप में पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है।

ये गांव है सौर ऊर्जा से संचालित

सतारा जिले का मन्याचीवाड़ी गांव महाराष्ट्र का पहला 100 प्रतिशत सौर ऊर्जा से संचालित गांव माना जाता है। गांव के घरों, स्कूलों, डेयरी और स्ट्रीट लाइटों में बिजली सौर ऊर्जा से मिलती है। इस पहल से गांव आत्मनिर्भर बना है और लोगों का बिजली खर्च भी कम हुआ है। यह गांव अन्य ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रेरणा बन गया है।

सातारा सोलर पावर प्लांट यह महाराष्ट्र के सातारा में स्थित 28.8 मेगावाट की एक प्रमुख सौर ऊर्जा परियोजना है। यह प्रोजेक्ट मई 2014 में चालू हुआ था और तब से राज्य की ग्रिड को नवीकरणीय ऊर्जा दान कर रहा है।

मन्याची वाड़ी: महाराष्ट्र का पहला सोलर विलेज सातारा जिले का मन्याचीवाड़ी गांव महाराष्ट्र का पहला 100% सौर ऊर्जा से संचालित गांव बन गया है।

आत्मनिर्भरता: गांव के सभी घरों, स्ट्रीटलाइट्स, स्कूलों और डेयरियों में बिजली केवल सौर ऊर्जा के माध्यम से मिलती है।

उद्देश्य: इस पहल को राज्य सरकार की 'सौर ग्राम योजना' के अंतर्गत छोटे गांवों को 100% सौर ऊर्जा से लैस करने के लिए एक मॉडल के रूप में देखा जा रहा है।

जालना में मालगाड़ी का आगमन

विगत दिवस रविवार को ओडिशा राज्य के अंगूल स्थित 16 कंटेनरों को लेकर मल्टी-मोड लॉजिस्टिक्स पार्क ड्रायपोर्ट पहुंची। विदित हो कि यह एक बहुचर्चित व महत्वकांक्षी परियोजना है। उक्त परियोजना मराठवाड़ा के उद्योगों व कृषि उत्पादों को वैश्विक बाजार में बहुत तेज गति से और किफायती दरों पर आयात और निर्यात करने में सक्षम बनाएगी। जिलाधिकारी आशिमा मित्तल ने ट्रेन का औचक निरीक्षण कर पूजा-अर्चना की। जालना-छत्रपति संभाजीनगर राजमार्ग पर स्थित जवसगांव और दरेगाव सीमा क्षेत्र में 500 एकड़ भूमि में से मल्टीमोड लॉजिस्टिक्स पार्क 68 एकड़ जमीन पर पहले चरण का काम शुरु हो चुका है। उक्त परियोजना की घोषणा नितिन गडकरी ने विगत 8 अगस्त 2014 को की थी। इसके बाद भूमि का अधिग्रहण शीघ्र गति से कर लिया गया और इसे मुम्बई स्थित जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट, मुम्बई को हस्तांतरित कर दिया गया। कई लोगों ने इस परियोजना को गति देने की कोशिश की, लेकिन 25 दिसम्बर 2015 को गडकरी द्वारा आधारशिला रखे जाने के बाद यह परियोजना ठप पड़ गई। बाद में ड्रायपोर्ट को मल्टीमोड लॉजिस्टिक्स ड्रायपोर्ट में परिवर्तित कर दिया गया।

ओडिशा के अंगुल स्थित स्थित टाटा स्टील कम्पनी गोदाम से पहली मालगाड़ी स्टील, लोहे की छड़, कच्चा माल आदि लेकर जालना पहुंची। मल्टीमोड लॉजिस्टिक्स पार्क प्राइवेट लिमिटेड के वरिष्ठ प्रबंधक प्रशांत साहू ने बताया कि घरेलू माल ढुलाई शुरु हो गई है और अंतरराष्ट्रीय माल ढुलाई जून के पहले सप्ताह में शुरु होगी। इस अवसर पर अतिरिक्त जिलाधिकारी रमेश मिसाळ, पोलाद स्टील के संचालक नितीन काबरा, मिता काबरा, विकास मल्टीमोड लॉजिस्टिक्स ड्रायपोर्ट प्रा. लि. के संचालक विकास अग्रवाल, महिको के रितेश मिश्रा, गोविंद गोयल सहित कई उद्योगपति उपस्थित थे।

कार्यकर्ता विकास वर्ग में ईंधन बचत का अभिनव प्रयोग

जलगांव : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पश्चिम क्षेत्र के कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम) का आयोजन जलगांव स्थित खांदेश एजुकेशन सोसायटी के एम. जे. कॉलेज में किया गया है। इस प्रशिक्षण वर्ग में 255 स्वयंसेवक शिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ ही 40 से 50 कार्यकर्ता विभिन्न व्यवस्थाओं में कार्यरत हैं। लगभग 500 से 600 लोगों के दैनिक भोजन प्रबंधन की बड़ी जिम्मेदारी वर्ग के सामने थी। संघ की कार्यपद्धति के अनुरूप पर्यावरण अनुकूल, स्वदेशी और कम खर्च वाले विकल्प खोजने का प्रयास विशेष चर्चा का विषय बना है। सामान्यतः इतने लोगों के भोजन निर्माण के लिए प्रतिदिन कम से कम दो बड़े एलपीजी गैस सिलेंडरों की आवश्यकता पड़ती। प्रत्येक सिलेंडर का खर्च जोड़ने पर प्रतिदिन लगभग 6 हजार रुपए खर्च होने का अनुमान था। पूरे 21 दिनों के वर्ग के लिए यह खर्च सवा लाख रुपए तक पहुंचता, परंतु स्वयंसेवकों ने इसका वैकल्पिक समाधान खोज निकाला।

धुले के स्वयंसेवक उद्योजक राहुल कुलकर्णी ने विशेष प्रकार का चूल्हा तैयार किया है। इस चूल्हे में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत का उपयोग किया जा रहा है। कपास अथवा तुअर (अरहर) के सूखे पौधों तथा गाय के गोबर के मिश्रण से तैयार 'वुड ब्लॉक्स' इस चूल्हे का मुख्य ईंधन हैं। बाजार में लगभग 3 रुपए प्रति किलो अथवा 150 से 200 रुपये प्रति बोरी की दर से वुड ब्लॉक्स आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रयोग के कारण जहां प्रतिदिन लगभग 6 हजार रुपये का एलपीजी खर्च अपेक्षित था, वहीं अब मात्र 300 रुपये में भोजन निर्माण हो रहा है। अर्थात प्रतिदिन बड़े स्तर पर ईंधन की बचत हो रही है और खर्च में भी कमी आई है। विशेष बात यह है कि यह विकल्प केवल सस्ता ही नहीं बल्कि पर्यावरण के भी अनुकूल है। खेती से निकलने वाला जैविक अवशेष उपयोगी ईंधन में परिवर्तित हो रहा है, जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिल रहा है। सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने भी इस कार्य की सराहना की।

इधर भी देखें

बच्चे के जन्म पर सोहर गाने की परम्परा बहुत राज्यों में हैं। सोहर के गीत बहुत कर्णप्रिय होते हैं। उत्तर प्रदेश के बस्ती में एक भव्य और ऐतिहासिक सांस्कृतिक महाकुम्भ में 2500 महिलाओं ने एक साथ, एक सुर और एक ताल में पारम्परिक सोहर का गायन कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज करा लिया।

ये चाय पी है आपने?

मक्का (भुट्टा) छीलते समय हम उसके ऊपर के सुनहरे-हरे धागों को फेंक देते हैं या खेत में ही जला देते हैं, लेकिन भारत में अब इसी कॉर्न सिल्क को सुखाकर प्रीमियम हर्बल चाय बनाई जा रही है। आपको जानकर हैरानी होगी कि ऑनलाइन स्टोर्स और बड़े शहरों के बाजारों में 50 ग्राम कॉर्न सिल्क चाय 400 से 500 तक में बिक रही है। बताया जाता है कि मक्के के इन सफेद-हरे धागों में भरपूर एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। यह शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकालता है और किडनी को स्वस्थ रखता है।

यहां खिलता है दुर्लभ फूल

हिमालय की ऊंची पहाड़ियों में समुद्र तल से करीब 4000 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई पर एक बेहद दुर्लभ और सुंदर फूल खिलता है, जिसका नाम है ब्रह्मकमल। सफेद रंग का यह फूल ठंडी हवाओं, बर्फीले मौसम और कठिन पहाड़ी परिस्थितियों के बीच भी अपनी खास पहचान बनाए रखता है। इसकी सबसे विशेष बात यह है कि यह हर जगह नहीं उगता। यह केवल ऊंचे हिमालयी क्षेत्रों में सीमित समय के लिए खिलता है और रात के समय इसकी सुंदरता और भी ज्यादा आकर्षक दिखाई देती है। यह दुर्लभ फूल उत्तराखंड के केदारनाथ, बद्रीनाथ और हिमालय के कई ऊंचे क्षेत्रों में पाया जाता है।

टीजेएसबी सहकारी बैंक लिमिटेड.
मल्टी-स्टेट शेडयूल्ड बैंक
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

सपना बड़े घर का, सुख पूरे परिवार का।

टीजेएसबी
होम लोन

मर्यादा
₹ 3 करोड़*

नियम एवं शर्तें लागू*

www.tjsb.bank.in | 022-48897204